(ii) NEED TO GIVE PROPER PIACE TO SANSKRIT IN THE PROGRAMMES OF AKASHWANI AND DOORDARSHAN

श्री प्रताप भानु शर्मा (बिदिशा): उपाध्यक्ष महोदय, संस्कृत हमारे राष्ट्र की प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ भाषा है और इस भाषा की अमिट छाप भारतीय इतिहास तथा संस्कृति पर हजारों वर्षों से पड़ी है। अतः केन्द्र सरकार को इसके प्रचार एवं प्रसार के लिये अधिक से अधिक उपाय करने चाहियें। संस्कृत भाषा देश की सभी भाषाओं की जननी होने के कारण इसमें राष्ट्र भाषा बनने के सभी गुण विद्यमान हैं। अतः सरकार को इस ओर सक्रियता से विचार करना चाहिये।

विगत सप्ताह संसदीय संस्कृत परिषद् के तत्वावधान में संसद-सदस्यों एवं संस्कृत प्रेमी विद्वानों की एक आवश्यक बैठक संसदीय सौध में हुई थी, जिसमें राष्ट्र एवं संस्कृति के हित में कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई, परन्तु खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि आकाशवाणी एवं दूर-दर्शन प्रसारणों में इस कार्यक्रम को कोई स्थान नहीं दिया गया। संसदीय संस्कृत परिषद् के अध्यक्ष द्वारा इस कार्यक्रम की पूर्व-सूचना भी आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रों को दे दी गई थी, परन्तु फिर भी यहां से कोई प्रतिनिधि नहीं पहुंचा था।

सूचना एवं प्रसारण विभाग का यह उपेक्षापूर्ण रवैया दुःखद एवं आश्चर्यजनक है। अतः इस सदन के माध्यम से मैं सूचना एवं प्रसारण मंत्री जी से अनुरोध करना चाहूंगा कि वे आकाशवाणी एवं दूरदर्शन दोनों को यह निर्देश दें कि भविष्य में संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार और साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बराबर स्थान मिलना चाहिए। जिस प्रकार आकाशवाणी से प्रतिदिन संस्कृत में बुलेटिन प्रसारित किये जाते हैं, उसी प्रकार दूरदर्शन से भी सप्ताह में कम-से-कम 30 मिनट का एक संस्कृत कार्यक्रम अवश्य प्रसारित किया जाना चाहिए ताकि राष्ट्र की प्रतिभाओं को अपनी योग्यता दिखाने का अवसर प्राप्त हो सके। यदि संभव हो तो आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से संस्कृत भाषा को सिखाने के पाठ्यक्रम भी प्रसारित किए जाने चाहिए। आशा है सरकार इस दिशा में शीघ्र ही आवश्यक कार्यवाही करेगी।

(iii) REPORTED HIGH PRICE OF GAS STOVES

SHRI K. LAKKAPPA (Tumkur): Sir, a large number of manufacturers of gas stoves are adopting a novel method to push the sales of their high. They which are priced rather high. They are offering incentive to the dealers of the liquified petroleum gas stoves from a wrist watch to a two week free trip to the United States. The customers are coerced into buying a particular expensive stove from the dealer and due to which the dealers are selling only those stoves by which they are getting maximum commission. The price of each gas stove is sky-rocketing and there is no control on the price of the gas stove. Due to this dealer'manufacturer mainpulation, the general public and customers of the gas stoves are suffering at large.

A study of the doubel burner hot plates which are common in the market will show that there is practically no difference between one manufacturer and another in the thermal efficiency, lasting values are the looks of the LP gas stoves but the prices charged to the consumers vary considerably.

A consumer who is waiting for a long years to get the stove is easily influenced into buying most expensive gas stove from the dealer. Therefore, the dealers interest in canvasing a more expensive hot plate is very evident because of the price percentage commission formula.

Originally, the formula was evolved by oil companies in early 1970. The Indian Oil Corporation particularly used to strictly scrutinise and approve the quality and the price of the stove to prevent this exploitation. No manufacturer unilateraly increased the price of LP gas stoves and this was done by the oil companies to protect the interst of the consumer. Today, when there is no derth of manufacturers to fulfil the totall requirement of the entire country for